अनमोल वचन

अंशिका गर्ग
रूड़की

हृद्रय की गाठों का खुल जाना ही सच्चा ज्ञान है, और ज्ञान होने पर ही मुक्ति होती है। **महोषनिषद**

कठोर परिश्रम वह कुंजी है, जो किस्मत के द्वारा खोल देती है। **चाणक्य**

धीर पुरूष आपत्तिकाल के समय और अधिक दृढ़ हो जाते हैं। **सोमदेव**

मिथ्या का स्थान यदि कहीं है, तो मनुष्य के मन को छोड़ कर कहीं और नहीं है। **शरदचन्द्र चटर्जी**

मिथ्या के झोले में सत्य मान कर वहन करने में कल्याण नहीं बल्कि इससे महत्ता नष्ट हो जाती है। **रविन्द्रनाथ टैगोर**

परोपकार के समान कोई धर्म नहीं, दूसरों को दुःख देने के समान कोई पाप नहीं। **गोस्वामी तुलसीदास**

धर्म मनुष्य में विद्यमान जन्म–जात शक्तियों की अभिव्यक्ति मात्र है। **विवेकानंद**

धर्म के दो रूप हैं – तत्व, ज्ञान और नैतिक आधार। **महावीर स्वामी**

सत्यनिष्ठा नारियों का स्वाभाविक गुण है। **प्रेमचन्द्र**

सत्य पुरूषों की मित्रता कभी जीर्ण नहीं होती। **महाभारत**

देता है, लेता है, रहस्य कहता है, पूछता है, खाता है, खिलाता है – मित्र के यह छः लक्षण हैं। **अज्ञात**

सच्चा प्रेम दुर्लभ है और सच्ची मित्रता और भी दुर्लभ। **ला. लैन्टेन**

धर्म जहाँ होता है, वहीं विजय होती है। **महाभारत**

मन की दुर्बलता से अधिक भयंकर और कोई पाप नहीं है। **विवेकानंद**

विलासिता की ओर आकर्षण और तपस्या से विरक्ति मानव स्वभाव की दुर्बलता है। **अज्ञात**

मिथ्या पाप है किन्तु मिथ्या को सत्य में मिलाकर कहना दुनिया का सबसे बड़ा पाप है। **अज्ञात**